IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

तेजेन्द्र शर्मा की कहानियो में दाम्पत्य जीवन के विविध रंग

डॉ.अर्चना डैनियल

सहायक प्रोफेसर

विश्व भर में भारतीय मूल के लोग फैले हुए हैं जो भारत से बाहरर हकर भी हिन्दी साहित्य के लिए समर्पित हैं। विदेश में रहकर रचे जा रहे हिंदी साहित्य में कविता, उपन्यास, कहानी, नाटक, एकाकी, यात्रा वृत्तांत आत्मकथा आदि विधाएं सम्मिलित हैं। ये साहित्यकार अपनी रचनाओं के भारतीय मूल्य, इतिहास, सभ्यता, संस्कृति आदि के माध्यम से भारतीयता को सुरक्षित रखे हुए हैं। विदेश में हो रहे रचनाकर्म में समकालीन हिन्दी साहित्य को नई दिशा दी है। साहित्य के क्षेत्र में एक नया चिन्तन, नई संवेदना तथा नई जीवन की दृष्टि प्रदान की है। अमेरिका, मॉरीशस, फीजी, सूरीनाम कनाडा, फ्रांस, ब्रिटेन,जैसे देशों में हिन्दी साहित्य की लगभग सभी विधाओं पर कार्य हो रहा है। विदेश में भी हिन्दी साहित्य अत्यन्त सम्पन्न है। ये साहित्यकार विशेष प्रकार की पहचान बनाकर सृजनरत हैं। इनके साहित्य को पढ़कर विदेशों के अनुभवों, भावनाओं व संवेदनाओं से जुड़ सकते हैं। एक से अधिक देशों की संस्कृति, सभ्यता जानने के लिए वहाँ रचा गया साहित्य पढ़ना सबसे सही विकल्प है, क्योंकि जिस परिवेश में रहकर कथा, कविता लिखी जाती है उसमें उस परिवेश की झलक अवश्य ही मिलती है।

आज ब्रिटेन की कुल आबादी का एक प्रमुख हिस्सा भारतीय मूल का है। यू.के. में तकरीबन बारह लाख अप्रवासी नागरिक हैं। मात्र लंदन में ही लगभग साढ़े सात लाख अप्रवासी एशियन नागरिक हैं, जिनमें से अधिकांश भारत के विभिन्न प्रान्तों के भाषा–भाषी है अन्य दूसरे देशों से आए भारतीयों से दिखते ऐसे लोग हैं जिनके पूर्वज सदियों पहले किन्हीं कारणों से अन्य देशों को गमन कर गये।थे। अब उनके वंशज यहाँ से माइग्रेट करके ग्रेट ब्रिटेन के वाशिंदे वेस्टइंडीज आइलैंड कीनिया, युगांडा, मॉरीशस आदि हो गए हैं। और उनके रंगरूप और शारीरिक बनावट में आज भी भारतीय छवि है। समकालीन कथा साहित्य में तेजेन्द्र शर्मा जी अतुलनीय कथाकार के रूप में उभरकर आये है।

तेजेन्द्र जी की कहानियाँ उनके सजग साहित्यकार होने का प्रमाण है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी तेजेन्द्र जी कथाकार गजलकार होने के साथ ही काव्य रचना भी करते हैं। तेजेन्द्र शर्मा न केवल हिन्दी भाषा मे रचनायें करते हैं बल्कि लंदन में रहकर कथा यू. के. के माध्यम से हिंदी के साथ उर्दू और पंजाबी साहित्य के प्रचार–प्रसार का कार्य भी कर रहे है। तेजेन्द्र शर्मा जी विशेष रूप से कथाकार माने जाते हैं। इनकी कहानी में तत्कालीन सामाजिक यथार्थ मुख्य विषय रहता है।

प्रवासी साहित्यकार अपने साहित्य के माध्यम से अपनी जमीन से उखड़ने तथा परायी जमीन पर बसने से उत्पन्न अंतद्वन्द्वों को स्वर दे रहा है। तेजेन्द्र जी हिन्दी के ऐसे कहानीकार हैं जो दो देशों के बीच मानवीय संबंधों की अंतरतहों तक पहुँचकर उसे मनोवैज्ञानिक ढंग से अभिव्यक्त करते है। उनकी कहानियों में विषयों की विविधता है, परिवार, संबंध, समाज और वैश्विक जीवन इनकी कहानियों का विषय रहता है। तेजेन्द्र जी ने अपनी कहानियों में मानव जीवन के विभिन्न रिश्तों को उनकी समस्या विषमता और प्रेम को बखूबी दर्शाया है। चाहे वह पिता–पुत्र का हो, माँ–बेटी या पति–पत्नी का हो। सभी संबंधों में व्याप्त प्रेम औपचारिकता मतभेद, बिखराव सभी से परिचित कराया है। तेजेन्द्र जी ने अपनी विभिन्न कहानियों के माध्यम से दाम्पत्य जीवन को मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया है, कहीं पर भौतिकवाद वैवाहिक जीवन पर हावी है, तो कहीं संबंधों में औपचारिकता दृष्टव्य है। कब्र का मुनाफा, कैंसर, हाथ से फिसलती जमीन कोख का किराया प्यार क्या यही है? सिलवटे आदि कहानियों में वैवाहिक संबंध में बंधे पति–पत्नी के आपस में प्रेम, अकेलापन, समर्पण, स्वार्थ और संवेदनहीनता देखने को मिलती। है। प्रत्येक कहानी में दाम्पत्य जीवन का अलग ही रंग है।

<u>दाम्पत्य जीवन में प्रेम का स्वरूप</u>

कथाकार तेजेन्द्र शर्मा जी की कहानियों में दाम्पत्य जीवन को बेहद बारीकी से प्रस्तुत किया गया है। स्त्री–पुरुष का वैवाहिक संबंध में जुड़े रहने एक मात्र आधार प्रेम होता है। आपसी प्रेम और विश्वास की नींव पर ही अन्य कहानियों का घर बनता है। तेजेन्द्र जी ने अपनी कहानियों में विभिन्न प्रकार से दाम्पत्य जीवन में प्रेम के महत्व और स्वरूप की उजागर किया है।

कोख का किराया एक संवेदनशील कहानी है। इसमें भारतीय मूल की दो युवती (जया और मनप्रीत) अंग्रेजी युवक डेविड और गैरी से विवाह करती है। जया का पति मशहूर फुटबॉल खिलाड़ी है तथा मनप्रीत (मैनी) का पति रेल ड्राइवर है। गैरी और डेविड मित्र है जिस कारण जया और मैनी का भी रिश्ता अच्छा है। मैनी खुले विचारों की लड़की है वह डेविड को पसन्द करती है या कहें कि एकतरफा प्रेम करती है। डेविड को तो सभी लड़कियों पसंद करती है परन्तु मैनो को विशेष लगाव है। डेविड और गैरी दोनों अपनी पत्नियों को समर्पित है। मैनी और गैरी के दो बच्चे हैं जबकि जया और डेविड के विवाह के छ वर्ष पश्चात भी कोई संतान नहीं है। जया माँ नहीं बन सकती। डेविड को एंग्लो इण्डियन

बेबी चाहिए इस कारण दोनों सरोगसी के लिए मैनी को चुनते हैं। जया मैनी को सरोगेसी के लिए मना लेती है परन्तु गौरी इसके लिए राजी नहीं है। मैनी डेविड के साथ संबंध बनाने और बच्चे की माँ बनने को बेताब हैं। जबकि वह यह भी जानती है कि इसका परिणाम यह भी हो सकता है कि उसका पति उसे छोड़ दे। डेविड के साथ संबंध बनाना उसका सबसे बड़ा सपना है।

गैरी के समझाने पर वह कहती है – "गैरी तुम सपने नहीं देखते जागते हुए सपने देखने का आनन्द ही कुछ और होता है। जया और डेविड जिस बच्चे को जीवन भर प्यार देंगे, वह बच्चा मेरी कोख से जन्म लेगा। सोच कर ही मन पगला–पगला जाता है।"

कहानी में विशेष प्रकार के प्रेम संबंध को दिखाया गया है। गैरी अपनी पत्नी को अत्यधिक प्रेम करता है और उसे उस पीड़ा से बचाना चाहता है जो उसे बच्चे के जन्म के बाद मिलने वाली है। वह डेविड के प्रति मैनी के एकतरफा प्यार को भी समझता है परन्तु स्वीकार नहीं कर पाता। जया भी मैनी की इस स्थिति से परिचित है इसी का लाभ उठाते हुए उसे सेरोगेसी के लिए राजी कर लेती है। प्रेग्नेंसी के दौरान मैनी अपने पति और बच्चों पर ध्यान नहीं देती इसका परिणाम होता है कि गैरी अपने बच्चों के साथ नीना के पास चला जाता है। मैनी के एक पागलपन के कारण उसका बसा बसाया घर उजड़ गया।

"एक अनुभूति के लिए मैंने क्या–क्या खो दिया। श्सरोगेट माँ बनने के चक्कर में न वह माँ रह पाई और न ही पत्नी बस सरोगेट ही रह गई।"

अन्ततः बच्चा जन्म लेता है और जया मैनी को बताये बिना ही उसे अपने साथ ले गयी। मैनी अकेली थकी हारी घर पहुँची वहाँ कोई नहीं है, सिर्फ दीवारें हैं। जयां फोन पर मैनी से स्पष्ट कहती है कि उसका अब बच्चे से कोई सम्बन्ध नहीं है उसे उसकी कोख का किराया दे दिया गया है।

"कोख का किराया ! क्या यही औकात है मैनी की? जेफ जया और डेविड के पास मैनी के चारों ओर सन्नाटे से भरी चीखती दीवारें हैं।"

कहानीकार बदलते वैयक्तिक मूल्यों का सकारात्मक पक्ष नवीन दिशाए दिखाना नहीं भूलते सरोगेट मदर विज्ञान की देन है इसी विषय पर आधारित है यह कहानी मैनी अपने एकतरफा प्रेम और उतावलेपन में अपन वैवाहिक जीवन की बलि चढ़ा देती है।

तेजेन्द्र जी की दूसरी कहानी प्रेम की सकारात्मक पक्ष को दर्शाती है। कैंसर से पति–पत्नी के मध्य प्रेम, समर्पण और विश्वास से परिचित कराया है।

कैंसर कहानी असाध्य रोग कैंसर पर आधारित है। पूनम को ब्रेस्ट कैंसर है अभी उसकी पत्नी की उम्र ही क्या है मात्र तैतीस साल नरेन अपनी पत्नी से बहुत प्यार करता है पूनम की बीमारी का पता चलते ही वह अन्दर से पूरी तरह टूट जाता है यह उसके लिए असहनीय है।

"पूनम को कैसे बताऊँगा? कल उसका जन्मदिन है तैंतीसवां जन्मदिन क्या यह समाचार उसके जन्म दिन का तोहफा है? क्या उससे झूठ बोल जाऊँ? पर वह क्या दूध पीती बच्ची है? रिपोर्ट तो मागेगी ही देखेगी भी... और पढ़ेगी भी। तो फिर ।"

कैंसर कहानी में पति–पत्नी में परस्पर प्रेम और समर्पण सराहनीय है। नरेन अपनी पत्नी के कैंसर के आगे विवश है उसे यह समाचार देने का साहस भी नहीं है। फिर भी सारे साहस को एकत्रित करके पूनम को उसकी बीमारी के बारे में बताता है और स्वयं टूट जाता है नरेन पूनम को किसी भी कीमत पर खोना नहीं चाहता अपने पति को इस प्रकार बेबस, मजबूर देखकर पूनम उसे समझाती है संभालती है –"जब कह रहे हो कि पहली स्टेज है तो चेहरे पर मुर्दनी क्यों फैला रखी है। चावला आंटी भी तो कितने सालों से चल रही हैं। मैं भी ठीक हो ही जाऊँगी।"

पूनम के धैर्य और साहस के सामने नरेन स्वयं को छोटा महसूस करने लगता है। जहाँ पर नरेन को पूनम को दिलासा देना चाहिए. संभालना चाहिए था उस स्थान पर वह नरेन को संभालती है। इस बीमारी का एक ही इलाज है ऑपरेशन करके उसकी बाई ब्रेस्ट को काटकर निकाल देना। नरेन अपनी पत्नी के जीवन में आने वाले अधूरेपन को सोचकर व्याकुल हो उठता है। ऑपरेशन होने के बाद पूनम की जिन्दगी पहले जैसे सहज नहीं रही। आधुनिक विचार वाला नरेन अपनी पत्नी की पीड़ा देखकर अविश्वास तीज प्रार्थना, देवी इन सबमें फंस जाता है उसे अब बस एक चमत्कार की आशा है जो उसकी पत्नी को सही कर दें।

"चमत्कार कार्सीनीमा रैडिकले मैसेक्टमी सपाट छाती। लोगों की नजरें.... चंद्रमान कीदेवी! सुशील का बार्न अगेन । नजमा जी का ताबीज डॉ. पिण्टो की छाती पर बार–बार क्रॉस । दर्द के मारे फटता सिर!चमत्कार !..इसकी आशा तो ऑपरेशन से पहले भी लगाये बैठा था। पर कहीं विज्ञान ने चमत्कार की छाती काट दी और बीस नोड भी निकाल दिये। कल फिर कीमोथेरिपी।"

पूनम लाचार बेबस अपने पति को प्रार्थना करते देवी के आगे सिर हिलाते, ताबीज देख रही है, अपनी बीमारी से तो दुखी है ही साथ ही अपने पति को इस कैंसर में जकड़े हुए देखकर अत्याधिक पीड़ा का अनुभव करती है। कथाकार ने इस कहानी में पति पत्नी के परस्पर प्रेम, समर्पण के भाव को दर्शाया है।

<u>दाम्पत्य जीवन का नया स्वरूप (लिव इन रिलेशनशिप)</u>

सम्पूर्ण विश्व में भारत की पहचान उसके धर्म, रीति–रिवाज व संस्कारों के धनी होने से की जाती है। भारतीय समाज में विवाह को एक प्रमुख संस्कार के रूप में माना जाता है। विवाह के उपरान्त स्त्री–पुरुष अपना दाम्पत्य जीवन साथ में आरम्भ करते हैं।

कथाकार तेजेन्द्र जी ने इस लीक से हटकर आधुनिक परिवेश को ध्यान में रखते हुए नयी तरह की कहानी लिखी है, जिसमें उन्होंने साथ रहने के लिए विवाह जैसी अनिवार्य शर्त को कहानी का विषय बनाया है जिसे आधुनिक समाज लिव इन रिलेशनशिप के नाम से जानता है। प्यार क्या यही है? कहानी में पूजा एक प्रतिष्ठित पत्रिका की संपादिका है। वह आधुनिक विचार की नारी है, उसका सुबेर के साथ वैवाहिक जीवन सफल नहीं रहा और शीघ्र ही तलाक हो गया था उनकी एक बेटी भी है। पूजा अपने नये जीवन में व्यस्त है तभी उसकी मुलाकात शेखर से होती है और धीरे धीरे दोनों प्रेम के बंधन में बंध जाते हैं। शेखर पूजा से पन्द्रह वर्ष छोटा है परन्तु उन्हें आयु की परवाह नहीं है। शेखर अभी नया लेखक है, दोनों का प्रेम पराकाष्ठा पर है। उसका प्रेम समाज के रीति–रिवाज, जैसे जाल को तोड़ते हुए अपनी चरम सीमा पर है। "बजली गिर गयी थी सभी पर किसी ने मुँह बनाया तो कोई हाय तौबा मचाने लगा। लोग किसी को भी जीने क्यों नहीं देते समाज और प्रेम की यह पुरानी दुश्मनी कब तक चलती रहेगी? मनुष्य क्यों समाज के बनाये नियमों को तोड़ने को विवश हो जाता है? क्या प्रेम में इतनी शक्ति है?"

कहानी में विवाह की अनिवार्यता के स्थान पर प्रेम को प्राथमिकता दी गई है। शेखर युवा है वह अपनी उम्र की किसी भी लड़की से प्रेम कर सकता था विवाह कर सकता था परन्तु उसे तो अपने से बड़ी उम्र की वा स्त्री से पहली नजर में प्यार हो जाता है और धीरे–धीरे पूजा भी उसकी ओर आकर्षित होने लगती है और प्रेम सम्बन्ध में जाते हैं। दोनों रहते हैं, साथ घर चलाते हैं। एक विवाहित जोड़े की तरह जीवन यापन करते हैं। शेखर पूजा के सम्मुख विवाह का प्रस्ताव रखता है परन्तु पूजा इन्कार कर देती है। अपने पूर्व सम्बन्ध के टूटने के पश्चात् अब उसे विवाह एक आडम्बर प्रतीत होता है – "शेखर शादी–विवाह के झमेले में क्यों पहना चाहते हो? दोनों रह तो पति–पत्नी की ही तरह है न? फिर क्या फर्क पड़ता है पंडित के सामने फेरे लेने से या फिर अदालत में चंद कागजों पर हस्ताक्षर भर कर देने से?"

पूजा की बेटी अताक्षरी भी अपनी माँ के संबंध से खुश है उसे शेखर पसंद है वह उसे अपने पिता के स्थान पर देख सकती है। आधुनिक परिवेश में पली अंताक्षरी इस प्रकार के रिश्ते से सहमत है। माँ और शेखर चाचू के साथ रहने को स्वीकार कर लेती है। जो बात वह अपनी माँ से नहीं कह पाती वह शेखर से बेझिझक कह देती है।

"वैसे देखा जाए तो मभी और चाचू की जोड़ी खराब भी नहीं लगती। हाँ चाचू देखने में ममी से छोटे तो लगते हैं किन्तु ऐसा भी कोई नियम है कि लड़की हमेशा पुरुष से छोटी ही हो। कई पुरुष भी तो अपने से आधी उम्र की लड़की से विवाह कर लेते हैं फिर ममी तो अब भी कितनी जवान और सुन्दर लगती हैं। वैसे बेचारी कब से अकेली रह रही हैं। उन्हें भी तो साथ

की आवश्यकता महसूस होती होगी और चाचू गम्भीर विषय पर भी बात कर लेते हैं और कैसे पल में हँसी मजाक पर उतर आते हैं। चाचू इज सो एडोरेबल।"

इस प्रकार हम देखते हैं कि कहानी प्यार क्या यहीं है? में नये प्रकार के रिश्तों को लेखक ने अपने पाठकों के सम्मुख रखा है। कहानी के माध्यम से आधुनिक परिवेश के बदलते मूल्यों को दृष्टव्य किया है तथा वर्तमान समय की आवश्यता और स्थिति को समझाने का प्रयास किया है।

संबंधों की कृत्रिमता -

जब दो संस्कृतियों के मिलने से यदि विचारों में बदलाव आते हैं, तोरिश्तों में बदलाव आना स्वाभाविक है। तेजेन्द्र जो ने अपनी कहानियों में पति–पत्नी के बदलते रिश्तों तथा रिश्तों में खोखलापन, एकाकीपन को बहुत ही सजीवता के साथ प्रस्तुत किया है।

"हाथ से फिसलती जमीन "कहानी इसी प्रकार के वैवाहिक जीवन से संबंधित है। कहानी में पत्नी द्वारा पति को नजरअंदाज करने की तथा इसीकारण आयी संबंध में आयी कृत्रिमता देखने को मिलती !

नरेन भारतीय परिवेश में जन्मा है लंदन आकर बसने के बाद एक यूरोपियन लड़की जैकी से विवाह करता है. विवाह से पूर्व और पश्चात भी कुछ समय तक रिश्तों में मधुरता बनी रही किन्तु समय के साथ नरेन वर्णभेद का शिकार हो जाता है। अपने ही घर में अपने ही परिवार में रहकर वह हीनभावना से ग्रस्त हो जाता है, क्योंकि जैकी और उनके बच्चे सब एक रंग के है और नरेन अकेला भारतीय चमड़ी वाला है। इसी कारण से वह सभी रिश्तों पुत्र–पुत्री, नाती, पोते यहाँ तक कि अपनी पत्नी के होते हुए भी अकेला है। बच्चे उसे पसंद नहीं करते। युवा नरेन से वृद्ध नरेन तक की जीवन यात्रा है यह कहानी !

"हमेशा पैसा वह स्वयं कमाता था मगर उसका हिसाब–किताब जैकी ही रखती थी। बच्चे भी माँ से डी पैसे माँगते थे। सच तो यह है कि उसे अपने ही बच्चों का उच्चारण समझ नहीं आता था। बच्चे किस स्कूल में जायेंगे किस कॉलेज में पढ़ेंगे सब माँ ही तो तय करती थी। उसके हिस्से में एक बहुत अजीब काम आता था – कुढ़ना। वह अकेले बैठकर कुढ़ता रहता था। वैसे जब–जब बच्चे तरक्की करते दिखाई देते तो मन ही मन खुश भी हो लेता। मगर वह जानता था कि इन बच्चों की परवरिशमें उसका अपना कोई हाथ नहीं है।"

नरेन अपनी पत्नी और बच्चों से बढ़ती दूरियों से दुखी है। वह सोचता है कि पहले जैकी और उसका रिश्ता कितना मधुर, प्रेम से परिपूर्ण था। अब जैकी के लिए यह रिश्ता नाम भर का रहा गया है, उसे नरेन की मौजूदगी का एहसास भी नहीं होता। यहाँ तक कि उनके बच्चों की शादी में भी नरेन को सिर्फ एक गेस्ट की तरह बुलाया जाता है। प्रेम से शुरू

हुए इस रिश्ते को अब दोनों सिर्फ दिखावे भर के लिए जी रहे हैं।नरेन भारतीय संस्कारों से जुड़ा है आर चाहता है कि उसके बच्चे भी जुड़े। वो उन्हें भारत ले जाए, वहाँ के संस्कार सीखें अपने परिवार से मिले परन्तु जैकी ऐसा होने नहीं देती। वो उनमें भारतीयता नहीं आने देती यहाँ दोनों देशों की संस्कृतियों का टकराव होता है। नरेन अपने परिवार को याद करता है उनसे मिलना चाहता है परन्तु जैसी उसे रोकना चाहती है।

"जैकी तुम अपनी माँ से करीब–करीब रोजाना मिलने जाती हो। क्या मैंने तुम्हें रोका है? नहीं तो क्या मेरा इतना भी हक नहीं बनता कि मैं अपने बच्चों को अपने माँ–बाप से मिलवाने ले जा सकूँ। क्या इनकों नहीं पता चलना चाहिए कि इनके दादा–दादी भी हैं, बुआ और चाचा भी हैं?" इस तरह नरेन अपने बच्चों को भारतीय संस्कारों से जोड़ने में असफल रहता है।

"हाथ से फिसलती जमीन" में नरेन और जैकी के मध्य विशवास काम हो जाता है। वैवाहिक जीवन में आये बदलाव संबंध सिर्फ कृत्रिम बनकर रह जाता है। आपसी समझ पर समय के अभाव में एक सुखी वैवाहिक जीवन दिखावे मात्र का रह जाता है। इस तरह कहानी में देखा जा सकता है कि वैवाहिक संबंध में संस्कृति के लोग प्रेम के साथ नये जीवन का आरम्भ करते हैं और समय के साथ रिश्ते में जहाँ प्रगाढता आनी चाहिए वहाँ रिश्तों में बनावटीपन दिखने लगता है रिश्ते में खोखलापन रह जाता है। पति–पत्नी होने के बावजूद भी दोनों अलग अलग व्यक्तित्व बनकर रह जाते हैं।

<u>आधुनिक परिवेश और संबंधों का बिखराव–</u>

कथाकार तेजेन्द्र शर्मा की कई कहानियाँ ऐसी हैं जिनमें दाम्पत्य संबंध में बिखराव देखा जा सकता है। जहाँ अंत में दोनों अपने लिए मिन्न रास्ते तलाशते हैं जैसे प्यार क्या यही है, कोख का किराया, मलबे की मालकिन सभी कहानियों की परिस्थितियाँ अलग–अलग है। किन्तु संबंधों का खोखलापन, अविश्वास, स्वार्थ व्याप्त है। प्यार क्या यही है ? में प्रेम विवाह होने के बाद भी दोनों का तलाक हो जाता है। कोख का किराया में अत्यधिक प्रेम होने के बावजूद भी गैरी को अपनी पत्नी नाजायज जिद और पागलपन के कारण उसे छोड़कर जाना पड़ता है। मलबे की मालकिन में एक स्त्री को कन्या का जन्म देने की सजा के तौर पर उसे घर से निकाल दिया जाता है। कुल मिलाकर संबंध बिखरते हुए नजर आते हैं।

तेजेन्द्र जी ने अपने कहानी पात्रों के माध्यम से परस्पर संबंधों में आये अविश्वास मतभेद तथा अहंवादी भावना के कारण रिश्तों को बिखरते हुए दिखाया गया है। अपने भारतीय संस्कारों को भूल नये परिवेश में जा बसने के बाद लोग स्वतंत्रता का अनुभव करने लगते हैं और आधुनिक विचार के होने के नाम पर मनमानी करते हैं। ऐसी ही एक कहानी है – टेलीफोन लाईन भारत का अवतार सिंह लंदन जा बसता है। वहाँ उसकी मित्रता अनवर

से होती है। अवतार की पत्नी पिंकी सदैव ही मुस्लिम समुदाय को पसंद नहीं करती परन्तु वह लंदन आकर अपने ही विचारों के विरुद्ध हो जाती है। बिना किसी ठोस कारण के अपने पति अवतार को छोड़कर अनवर के साथ चली जाती है।

"पिंकी मुसलमानों के विरुद्ध कितनी बातें किया करती थी। वह तो बुरका पहनने वाली औरतों को बंद गोभी तक कहा करती थी। फिर ऐसा क्या हो गया कि वह स्वयं औरत न रहकर बंद गोभी बनने को तैयार हो गई।" अवतार समझ ही नहीं पाया कि वह अपनी पत्नी के विश्वासघात से ज्यादा दुखी है या अपने मित्र के धोखे से यह इस घटना से आहत है स्वयं विदेश में अकेला पाता है। अवतार सोचता है कि जिसका हाथ मकर विवाह करके जीवन सगिनी बनाया था वह उसके साथ ऐसा कैसे कर सकती है उसे छोड़कर किसी और के साथ चली गई वह स्वयं को टूटा हुआ बेसहारा महसूस करता है। विदेश मं आने और बसने के बाद एक हो तोमा उसका अनवर और एक ही गहरा रिश्ता था जो दिल के सबसे कथा वह थी उसकी पत्नी पिंकी दोनों ही उसे धोखा देकर अकेला छोड़कर चले गये। अब उसका पराये देश में अपना रह ही कौन गया है।

"पिंकी भी बिना कोई संदेश छोड़े उसे अकेला छोड़ गई थी। पिंकी के इस तरह उसके जीवन से निकल जाने ने अवतार के व्यक्तित्व पर बहुत से गहरे निशान छोड़े हैं। उसे आज तक समझ ही नहीं आया कि कमी कहाँ रह गई क्या हालात सचमुच इतने बिगड़ गए थे कि पिंकी को घर छोड़कर जाना पड़ा।"

पिंकी अवतार के साथ अपने वैवाहिक जीवन में खुश नहीं थी। पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित होकर वह अपने लिए एक नया जीवन साथी चुनती है और इस कारण दाम्पत्य संबंध में जुड़े अवतार और पिंकी के रिश्ते में बिखराव आ जाता है।

वर्षों पश्चात् अवतार को उसके बचपन की मित्र जिससे अवतार ने प्रेम किया था परन्तु कभी कह नहीं पाया था उसका फोन आता है। अवतार एक बार फिर अपने लिए नये जीवन का सपना देखने लगता है। सोफिया उसे बचपन की याद दिलाती है, वो अवतार को बताती है कि उसे पता था कि अवतार उसे पसंद करता है और उसे भी अवतार पसंद था परन्तु परिवार के दबाव में आकर उसका विवाह कहीं और कर दिया गया था। अभी तो अवतार ने नये जीवन के बारे में सोचना आरम्भ ही किया था जिसमें अवतार सोफिया और सोफिया की बेटी थी। तभी सोफिया अवतार को कुछ ऐसा कहती है कि उसके जीवन में नये परिवार के बसने से पहले ही बिखराव आ जाता है –

वहाँ अवतार सुन रही हूँ। तुम मेरी बात सुनो दोस्त हो तुम तो मुझसे प्यार भी करते थे। तुम आजकल हो भी अकेले, भला तुम तुम खुद ही मेरी बेटी से शादी क्यों नहीं कर तुम मेरे ले? तुम्हारा घर भी बस जाएगा और मेरी बेटी की जिन्दगी भी सेटल हो जाएगी। तुम सुन रहे हो.

टेलीफोन लाईन कहानी में बनने से पहले ही एक रिश्ता टेलीफोन पर ही खत्म हो जाता है। तेजेन्द्र शर्मा जी ने इस कहानी में रिश्तों में आये बिखराद नये परिवेश की सोच और उसमें ढलते लोगों का चित्रण किया है।

इस प्रकार हम दखते हैं कि तेजेन्द्र शर्मा जी ने अपनी कई कहानियों दाम्पत्य जीवन के विविध रंग (सकारात्मक और नकारात्मक) दोनों को दिखाया है सभी कहानियाँ हृदयस्पर्शी और मर्मस्पर्शी है। ये कहानियाँ अपने आपने अद्‌भुत है। दाम्पत्य जीवन से जुड़ी कहानियों में प्रेम की चरम पराकाष्ठा भी है तो वहीं प्रेम विश्वासघात भी तेजेन्द्र जी ने यथार्थ जीवन को अपनी कहानी का विषय बनाया है। पाठक का सीधा संबंध उनकी कहानियों से जुड़ जाता है। कहानियों में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण देखने के लिए मिलता है। तेजेन्द्र जी की कहानियाँ सामान्य जनजीवन से संबंधित होती है, चाहे वह ब्रिटेन हो या भारत तेजेन्द्र जी समकालीन समाज के प्रति संवेदनशील कथाकार के रूप में हमारे समक्ष आते है।

संदर्भ :–

1. नयी जमीन नया आका"ा (समग्र कहानियाँ भाग–2) 2019 य"ा पब्लिकेशन नई तिल्ली
2. प्रवासी कथाकार औ तजेन्द्र भार्मा सम्पादक प्रो.पदीप श्रीधर (2018) भुभम पब्लिकेशन 128 हंसपुरम् कानपुर –2080 21 (उ. प्र.)
3. हिन्दी की वै"वक कहानियाँ–संपादक नीना पॉल (2012) अयन प्रका"ान 1/20 महरौली नई दिल्ली –110030
4. बेधर ऑखे अरू प्रका"ान (2007) दरियागंज नई दिल्ली
5. देह की कीमत संकलन ,वाणी प्रका"ान (1999) नई दिल्ली,